वार्षिक 150/- रुपये सितम्बर 2025 वर्ष 27 अंक 11 पृष्ठ - 28 मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

पितृपक्ष पर विशेष

गाय मनुष्य को मोक्ष प्रदान करने में सक्षम

सम्पादकीय

पितृपक्ष पर विशेष

गाय मनुष्य को मोक्ष प्रदान करने में सक्षम

गाय को इस पूरे संसार में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड (सातों लोकों) में सर्वश्रेष्ठ–दिव्य प्राणी मानने–स्वीकारने के साथ ही सर्वोच्च सम्मान (माँ की संज्ञा) से सम्मानित–प्रतिष्ठित किया गया है, आखिर क्यों? वास्तव में गाय अद्भुत, अद्वितीय, अतुलनीय और दिव्य गुणों की भंडार है। वैज्ञानिक दृष्टि–शोध से भी यह प्रमाणित हो चुका है कि गाय का दूध, दही, घी, गोबर एवं गोमूत्र अर्थात पंचगव्य विलक्षण गुणों से भरपूर हैं। पांचों पदार्थों के औषधीय गुणों के महत्व को अब पूरा विश्व भी बाध्य होकर स्वीकार कर रहा है।

आध्यात्मिक–अहिंसक राष्ट्र भारत में तो आदिकाल से ही हमारे ऋषि–मुनियों ने प्राकृतिक रूप से अपने शोध–अनुसंधान और सत्य का साक्षात्कार करने के बाद ही गाय को सर्वोच्च सम्मान–माँ की संज्ञा (गोमाता) से विभूषित किया है। गाय के निवास गोलोक (परमधाम) को सातों लोकों में सर्वश्रेष्ठ कहा–माना जाता है। इसी गोलोक में साक्षात परब्रह्म परमात्मा निवास करते हैं। धार्मिक दृष्टि से मान्यता है कि सभी देवी–देवताओं का वास भी गोमाता में है, जो ब्रह्म सत्य है। इसीलिए गोमाता साक्षात ईश्वर स्वरूप हैं, जिनकी पूजा–अर्चना करने से सभी देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना संपन्न हो जाती है। आर्थिक पहलू से गाय–गोवंश भारत की समृद्धि–सम्पन्नता का प्रमुख आधार है। स्वास्थ्य पक्ष से गोमाता चलता–फिरता औषधालय है, जिसके माध्यम से सभी प्रकार की बीमारियों के साथ ही असाध्य रोगों का उपचार भी किया जा सकता है। मनुष्य के सभी पापों का क्षरण करने में भी गोमाता समर्थ हैं। **इस आधार पर ही गाय मनुष्य को मोक्ष प्रदान करने में सक्षम है।** उपर्युक्त लौकिक–अलौकिक विशेषताओं के कारण ही गोमाता चारों पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्रदान करने की सामर्थ्य रखती हैं, जो सर्वविदित है ही। सच तो यह है कि गोमाता हर दृष्टिकोण से मनुष्य के लिए मंगलदायी और कल्याणकारी हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी रचित "रामचरित मानस" के अनुसार – **विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार।** अर्थात् परब्रह्म परमेश्वर ने ब्राह्मण, गाय, देवता एवं संतों की रक्षा के लिए ही मनुष्य के रूप में जन्म लिया, जो मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के नाम से विश्वविख्यात हैं। गोमाता–गोवंश की सेवा–सुरक्षा एवं संवर्धन के लिए अपना अधिक समय न दे पाने की वजह से भगवान श्रीराम ने कहा था – "मैं अगला जन्म, विशेषरूप से गोमाता–गोवंश की सेवा–संरक्षण–संवर्द्धन के लिए ही लूंगा। और अगले जन्म में भगवान श्रीराम योगेश्वर श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए। सभी देशवासी यह भलीभांति जानते हैं कि योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गोमाता–गोवंश का पालन–पोषण करने के साथ ही सेवा, संरक्षण और संवर्द्धन किस प्रकार किया। विलक्षण गोसेवा–संरक्षण–संवर्द्धन के आधार पर ही योगेश्वर श्रीकृष्ण गोपाल–गोविन्द कहलाए। इन स्वरूपों में उनकी पूजा–अर्चना भी की जाती है। अतः गाय के बिना गोपाल–गोविन्द की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गोविन्द का कहना है–**गोवंश हमारे चारों ओर रहे मैं मध्य में रहूं।**

इस प्रकार सर्वश्रेष्ठ गोपालक–संरक्षक भगवान श्रीकृष्ण ने गोमाता की महिमा को प्रस्थापित कर सम्पूर्ण मानवजाति को संदेश दिया कि गोमाता–गोवंश की सेवा–संरक्षण–संवर्द्धन करने से मनुष्य अपनी विकराल समस्याओं का समाधान कर सकता है, सुख–शांति एवं समृद्धि–संपन्नता प्राप्त कर सकता है, ब्रह्मज्ञानी बन सकता है और असंभव दिखने–लगने वाले कार्य को संभव कर सकता है। इसीलिए राष्ट्र के हर नागरिक का राष्ट्रीय कर्तव्य है कि वह तन–मन–धन और प्राणपण से गोमाता–गोवंश की सेवा–संरक्षण–संवर्द्धन करे। इस सात्विक पद्धति से ही देश परम वैभवशाली बनने की ओर अग्रसर हो सकेगा।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 27 अंक-11 सितम्बर - 2025 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना

'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि

एक प्रति : रु. 30/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
स्वान प्रेमियों से हार्दिक निवेदन : लोकमंगलकारी है हमारा गोवंश-इसे बचायें	04
भारतीय गोवंश का स्वर्ण क्रांति की ओर एक कदम	07
वातव्याधि : रुग्णानुभव	12
सुखी और समृद्ध भारत की प्रतीक गोमाता	15
उत्तर गुजरात प्रांत, गोरक्षा विभाग की बैठक संपन्न	18
हाइवे बनाने वाली कंपनियां बेसहारा गोवंश के लिए सीएसआर फंड से खोलेंगीं गोशालायें	19
रेवाड़ी में गोरक्षकों ने लगाई जान की बाजी तस्करों ने चलती गाड़ी से फेंके कई गोवंश	20
Artificial Intelligence (AI) A New Horizon For Cow Conservation	21
The Divine Cow : Symbol of Dharma and Sustainer of Life	23

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त-गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं-

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर - 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011-26174732

हरिशंकर दीक्षित 'पथिक'

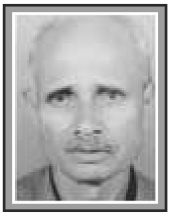

स्वान प्रेमियों से हार्दिक निवेदन

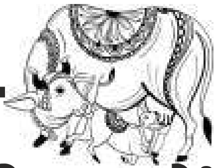

लोकमंगलकारी है हमारा गोवंश - इसे बचायें

कथित पशु प्रेमियों ने जैसा उत्साह कुत्तों के प्रेम में दिखाया है, यदि ऐसा ही प्रेम-उत्साह गोवंश के प्रति उनकी सुरक्षा और उनकी शक्ति सम्पदा के सद्भुपयोग हेतु करें तो गोवंश के समस्त दुख दूर हो सकते हैं। वैसे तो प्रत्येक प्राणी ईश्वर की सन्तान है, किन्तु गोवंश इनमें सर्वोत्तम है। यह प्रकृति की शक्ति पर्यावरण के पाँचों अंगों का पोषक है।

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' हमारे धर्म का आधार है। सम्पूर्ण वसुधा हमारा घर है और स्थावर जंगम प्राणी हमारे कुटुम्ब के अंग हैं। इस कुटुम्ब में असंख्य परिवार हैं। मनुष्य के परिवार में प्रायः घर के प्रांगण के वृक्ष, इन पर बसेरा करने वाले पक्षी और पालित–अपालित पशु जैसे गाय–बैल और कुत्ते–बिल्ली आदि सम्मिलित हैं। प्रत्येक के साथ मनुष्य यथेष्ट व्यवहार आदिकाल से ही करता आया है, यथा गोवंश का पालन–पोषण कुत्तों–बिल्लियों को रोटी तथा चिड़ियों आदि को दाना देना, मनुष्य का कर्तव्य रहा है। इसके साथ ही पशु–पक्षियों आदि से होने वाली अनावश्यक हानि को बचाने के लिए इन्हें आवश्यक ताड़ना भी दी जाती रही है।

स्वानों (कुत्तों) द्वारा कभी–कभी मनुष्यों को काटने से प्राणों तक की हानि होती है, अतः उन्हें अंकुश में रखने के लिये उनके साथ कठोरता का व्यवहार भी आदिकाल से किया जाता रहा है। कटखन्ने कुत्तों की टाँग तोड़ना और पागल को जान से मारना आदि क्रूर कृत्य हैं, जो आदिकाल से होते रहे हैं। सर्प की पूजा इसलिये की जाती है कि वे मनुष्य के घर से दूर रहें, किन्तु विषधरों को घर में देखकर मार देने का कार्य आरम्भ से होता रहा है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मनुष्य आदिकाल से ही समस्त प्राणियों को कुटुम्ब का अंग मानते

हुए प्रत्येक के साथ यथेष्ट व्यवहार करता आया है। क्रूरता का व्यवहार आत्मरक्षा हेतु ही किया जाता रहा है, जिसे अनुचित नहीं कहा जा सकता है। आज भी नरभक्षी बाघों को पकड़ में न आने पर गोली मारने के आदेश सरकार देती है।

आजादी के बाद हमारे देश में **''पशु क्रूरता अधिनियम''** बना। पशुओं के प्रति हिंसा की रोकथाम करना ही उसका उद्देश्य है। विडम्बना ही तो है कि यह अधिनियम दो मुंहे साँप की भाँति एक ओर तो संपेरों और बन्दर–भालूओं का खेल दिखाकर रोजी–रोटी चलाने वालों की रोजी पर आघात करता है, वहीं पशुओं की हत्याकर मांस बेचने या खाने वालों द्वारा की जाने वाली पशु हत्या की छूट देता है। वह भी तब जब हमारे देश में अन्नादि की प्रचुरता है। फल–सागभाजी आदि का मौसमी उत्पादन ही नहीं बेमौसमी उत्पादन भी होने से इनकी पर्याप्त उपलब्धता है। यही नहीं हजारों टन मौसमी शाक–भाजी खेतों से मण्डी तक

सड़कर नष्ट तक हो जाती है। यदि मांसाहार पर प्रतिबंध हो जाये तो यह सड़ने–गलने से बच सकती है।

कुछ दिन पूर्व दिल्ली उच्च न्यायालय ने छुट्टा घुमन्तू स्वानों के आतंक को देखते हुए उन्हें आश्रय स्थलों में रखने की आज्ञा सरकार को दी। कथित पशु प्रेमियों ने इस निर्णय को अनुचित मानकर आन्दोलन करके न्यायालय को इस पर पुनर्विचार कर वापस लेने का दबाव बनाया। न्यायालय ने पुनर्विचार करके निर्णय में बदलाव करते हुए केवल ह्विन्स–कटखन्ने और पागल कुत्तों को आश्रय स्थल में रखने का फैसला दिया और कहा अन्य सभी कुत्तों को बन्ध्याकरण कर छोड़ दिया जाये। इससे स्पष्ट है कि न्यायालय से भी चूक हो जाती है। यह प्रकरण हमारे देश की जनता की संवेदनशीलता का स्पष्ट प्रमाण है।

एक ओर जहाँ कुत्तों के सम्बन्ध में हमारे देश की जनता इतनी संवेदनशील और जागरूक है कि उसके आग्रह पर उच्च न्यायालय जैसा लोकतन्त्र का स्तम्भ भी झुक गया, वहीं दूसरी ओर यही जागरूक पशु प्रेमी जनता दशकों से गोवंश पर हो रहे अत्याचार पर मौन है, आखिर क्यों? कुत्तों से अथाह प्रेम करने वाले इन पशु प्रेमियों को उपेक्षित–तिरस्कृत गोवंश, जो कूड़ा–कचरा खाता, सड़कों पर वाहनों से चोटिल हो तड़पता–सिसकता तिल–तिल मरता, विलुप्ति की कगार तक पहुँचाया जा रहा है, दिखायी ही नहीं देता। यदि दिखायी भी देता है तो मनुष्य के शत्रु के रूप में जो कभी कभार क्रोधित होकर मनुष्य पर हमला कर उसे गम्भीर रूप से आहत कर देता है। प्रख्यात नेत्री मेनका गांधी जी महान पशु प्रेमी मानी जाती हैं किन्तु उन्होंने धरती की सृष्टि के मूलाधार गोवंश की दुर्दशा पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर कोई छोटा–बड़ा आन्दोलन जैसा कि कुत्ता प्रेमियों ने किया है; कभी प्रारम्भ नहीं किया। यदि वे प्रारम्भ करतीं तो जनता का एक वर्ग उनके साथ अवश्य खड़ा होता।

वर्तमान कुत्ता प्रेमी आन्दोलन ने यह सिद्ध कर दिया है कि हमारे पूर्वजों के लिये जो गोवंश मातृ–पितृवत आदरणीय था, वही

लोकमंगलकारी गोवंश आज अपना पूर्व आदर सम्मान खोकर कुत्तों से भी निकृष्ट दशा तक पहुँच चुका है। यह तो गोवंश का कुछ सौभाग्य है कि दस–ग्यारह वर्ष पूर्व सरकार बदली और अनेक प्रदेशों में गो आश्रय स्थलों की स्थापना हुई तो इसके कष्टों में थोड़ी कमी आयी, किन्तु यह पर्याप्त नहीं है। समस्त कुत्ता प्रेमियों को चाहिये कि वे पशु प्रेम के अपने दायरे का विस्तार कर इसे गोवंश तक ले जायें, क्योंकि कुत्ता जहाँ भैरव देव का वाहन है, वहीं नन्दी (बैल) तो साक्षात् भगवान शिव का वाहन है। ऐसा वाहन जो सदैव अपने स्वामी के भक्तों के हित में तत्पर भी रहता आया है। कृषि तथा कृषि आधारित कुटीर उद्योग और बैलगाड़ियों आदि में इसकी ही शक्ति का उपयोग आदिकाल से होता रहा है। यहाँ तक कि परमाणु अनुसंधान केन्द्रों में भारी– भरकम यन्त्र बैलगाड़ियों द्वारा ही दुर्गम मार्ग पर ढोकर लाये गये थे।

कथित पशु प्रेमियों ने जैसा उत्साह कुत्तों के प्रेम में दिखाया है, यदि ऐसा ही प्रेम–उत्साह गोवंश के प्रति उनकी सुरक्षा और उनकी शक्ति सम्पदा के सदुपयोग हेतु करें तो गोवंश के समस्त दुख दूर हो सकते हैं। वैसे तो प्रत्येक प्राणी ईश्वर की सन्तान है, किन्तु गोवंश इनमें सर्वोत्तम हैं। यह प्रकृति की शक्ति पर्यावरण के पाँचों अंगों का पोषक है। इसकी मधुर कर्णप्रिय वाणी आकाश में गूँजकर उसे आह्लादित करती है। गोमय–गोमूत्र धरती का पोषण करते हैं। उपले अग्नि और घृत वायु को बल प्रदान कर शोधित करते हैं। इसके खुरों के स्पर्श से गंगा जैसी पावन सरिताएँ तक कृतार्थ होती हैं। ऐसे लोकहितकारी गोवंश को दुःखों से मुक्ति दिलाने हेतु पशु प्रेमियों को संगठित होकर आन्दोलन करके उसे मनुष्य के घर में सम्मानजनक स्थान फिर से दिलाना चाहिए।

प्रस्तुत लेख के माध्यम से समस्त स्वान प्रेमियों से निवेदन है कि वे परस्पर विचार कर देखें कि हमारे गोवंश और स्वानों में सृष्टि के प्रति किसका कितना दायित्व है। इन दोनों रचनाओं में कौन–सी रचना अधिक महत्वपूर्ण है, यदि ये लोग गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे तो इन्हें यथार्थ का ज्ञान होगा। तब यह पायेंगे कि स्वानों की अपेक्षा गोवंश लाखों गुना महत्वपूर्ण है। यही नहीं इन्हें यह भी ज्ञात हो सकेगा कि गोवंश हमारे जीवन– यापन का मूलाधार होने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण और शुद्धिकरण का आधार होने के कारण अतिशय महत्वपूर्ण जैविक रचना है, जिसे ईश्वर ने हमारे भले के लिये ही रचा है।

विचार विमर्श से प्राप्त यह ज्ञान इनकी आँखें खोल देगा, तब सम्भव है कि ये गोवंश के प्रति हो रहे सामाजिक–राजनीतिक अन्याय के प्रतिकार हेतु वैसा ही आन्दोलन प्रारम्भ करें जैसा इन्होंने स्वानों के लिये किया है। यदि ये पशु–प्रेमी इस पावन लोकमंगलकारी सद्कार्य में सफलता प्राप्त करेंगे तो इन्हें गोवंश ही नहीं ईश्वर का भी आशीर्वाद मिलेगा। इस प्रकार हमारी धरती के समस्त प्राणियों को सुख प्राप्त होगा और वर्तमान काल में धरती पर अनेक समस्याओं का भी समाधान होगा। जैसे पर्यावरण प्रदूषण में भारी कमी आयेगी और ग्रामीण श्रमिक बेरोजगारी दूर होगी। गाँवों से नगरों की ओर पलायन रुकने से नगरों में जनसंख्या भार कम होने लगेगा।

यदि उन्नत कृषि यन्त्रों द्वारा बैलों से खेती होना प्रारम्भ होगा तब विशुद्ध पौष्टिक अन्न–फलों के सेवन से हमारा स्वास्थ्य उत्तम होगा। उत्तम स्वास्थ्य होने से हमारी रुचि कठोर परिश्रम करने की ओर उन्मुख होगी, तो मधुमेह और गठिया जैसे रोगों से मुक्ति भी मिलेगी। गोशक्ति–सम्पदा का सदुपयोग होने से **''एक पन्थ अनेक काज''** नामक नवीन लोकोक्ति का सृजन होगा। यह ध्रुव सत्य है कि गोशक्ति का सदुपयोग किये बिना हमारे अन्य समस्त प्रयास अप्राकृतिक होने के कारण निरर्थक ही सिद्ध होंगे। अतः इसकी शक्ति का सदुपयोग ही इस समस्या का समाधान है, यह सुस्पष्ट है।

चलभाष – 8765805322

प्रो. रामस्वरूप सिंह चौहान

भारतीय गोवंश का स्वर्ण क्रांति की ओर एक कदम

20 वीं सदी में भारत वर्ष में कई प्रकार की क्रांतियाँ हुईं, जिनमें से देश को आजादी मिलना, हरित क्रांति एवं स्वेत क्रांति विश्व प्रसिद्ध हैं। कृषि क्षेत्र में, रासायनिक खादों, कीटनाशकों तथा संकर बीजों के प्रयोग से अन्न उत्पादन में जहां एक ओर आत्मनिर्भरता बनी, वहीं दूसरी ओर इन रसायनों के अवशेष खाद्य श्रंखला में आ गये तथा विभिन्न प्रकार की बीमारियों में इनका योगदान होने लगा। अन्न उत्पादन तो काफी बढ़ा मगर जिस कीमत पर बढ़ा वह दिल दहलाने वाली बात है। पिछले कई दशकों के शोध ने यह सिद्ध कर दिया है कि खाद्य पदार्थों में उपस्थित कीटनाशकों एवं भारी धातुओं के अवशेष विभिन्न प्रकार की बीमारियों (उच्च रक्त ताप, गुर्दे का फेल होना, दिल का दौरा पड़ना, जोड़ों में दर्द होना, कैंसर, शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता का ह्रास एवं स्वरोग प्रतिरोधी क्षमता का बनना, प्रजनन क्षमता की कमी, बार–बार नये रोग उत्पन्न होना) को जन्म देते हैं। दूसरी ओर श्वेत क्रांति के फलस्वरूप हम दुनियां में नम्बर एक दुग्ध उत्पादक बन गये हैं, मगर यहां भी स्थति निराशाजनक है, क्योंकि जिस कीमत पर हम विश्व में दुग्ध उत्पादन के पहले पायदान पर पहुँचे हैं उसे बनाये रखना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव है।

दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए हमने पश्चिमी देशों के गोवंश का उपयोग कर संकरीकरण का एक नया आयाम जोड़ा, जिसके फलस्वरूप विभिन्न प्रकार की बीमारियों के कारक विदेशों से हमारे देश में आ गये। जिनसे पशु जगत में नई–नई बीमारियां उत्पन्न होने लगीं, जो संकर नस्ल के पशु तैयार किये गये वह बीमारियों के प्रति अति सुग्राही सिद्ध हुये। फलस्वरूप उनके रखरखाव का खर्चा अपेक्षाकृत कहीं अधिक होने लगा।

दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए हमने पश्चिमी देशों के गोवंश का उपयोग कर संकरीकरण का एक नया आयाम जोड़ा है जिसके फलस्वरूप विभिन्न प्रकार की बीमारियों के कारक विदेशों से हमारे देश में आ गये। जिनसे पशु जगत में नई–नई बीमारियां उत्पन्न होने लगीं, जो संकर नस्ल के पशु तैयार किये गये वह बीमारियों के प्रति अति सुग्राही सिद्ध हुये। फलस्वरूप उनके रखरखाव का खर्चा अपेक्षाकृत कहीं अधिक होने लगा। दूसरी, संकर नस्ल की गायें दो या तीन ब्याँत तक तो दूध सही देती हैं, लेकिन उसके बाद उनका दुग्ध उत्पादन इतना कम हो जाता है कि वह गोवंश आर्थिक दृष्टि से अनुपयोगी हो जाता है। संकर नस्ल

की गायों को उच्चतम दुग्ध उत्पादन के लिए बनाये रखना दूसरी या तीसरी पीढ़ी के बाद असम्भव हो जाता है। अतः विदेशी नस्लों के संकरीकरण की जो नीति अपनाई गयी वह सर्वथा फेल हो चुकी है। संकर नस्ल के गोवंश के रखने में खर्चा अधिक आता है उत्पादन अपेक्षा के अनुरूप नहीं मिलता फलस्वरूप इनकी उपयोगिता लगभग समाप्ति की कगार पर है। अगर हम एक दृष्टि स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में डालें तो पता चलता है कि बीसवीं सदी की सर्वोत्तम खोज एन्टीबायोटिक दवाओं की उपयोगिता नष्ट होती जा रही है। नित्य नई दवाओं के आगमन से स्थिति में सुधार के बजाय नुकसान ही अधिक देखने को मिलता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार शीघ्र ही एन्टीबायोटिक दवाओं की उपयोगिता न के बराबर रह जायेगी, क्योंकि इनके प्रति जीवाणुओं में ऐसी शक्ति उत्पन्न हो गयी है कि उनके ऊपर एन्टीबायोटिक दवाओं का प्रभाव न्यूनतम से नगण्य होता जा रहा है।

कारण स्पष्ट है, अधिकांश एन्टीबायोटिक दवायें जीवाणुओं को मारती नहीं, बल्कि बढ़वार को रोकती हैं एवं जीवाणु शरीर की भक्षण कोशिकाओं द्वारा खाकर खत्म किये जाते हैं। वातावरण में उपस्थित कीटनाशकों के अवशेष भक्षण कोशिकाओं को कमजोर करते हैं एवं उनकी जीवाणुओं से लड़ने की क्षमता को नष्ट करते हैं। फलस्वरूप शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता कम होती जाती है। वह व्यक्ति बार–बार बीमार पड़ता है। दवायें लेने पर पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं होता एवं इसके विपरीत उन दवाओं के दुष्प्रभाव शरीर के विभिन्न अंगों पर पड़ते हैं, जिन से अस्वस्थता दर काफी बढ़ रही है। रासायनिक दवाओं के दुष्प्रभाव विश्व प्रसिद्ध हैं, यदि हम किसी भी एक दवा को लें तो पायेंगे कि उस दवा के लेने से जहां एक ओर किसी एक रोग के ठीक होने की सम्भावना होती है, वहीं दूसरी ओर वही दवा शरीर में अनेक प्रकार की विकृति उत्पन्न कर देती है, जिससे व्यक्ति स्वस्थ होने के बजाय अस्वस्थ ही बना रहता है। एक बीमारी सही होगी तब तक दूसरी बीमारी लग जायेगी, दूसरी सही होगी तो तीसरी लग जायेगी और यही क्रम चलता रहेगा। इन्हीं सब परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये विश्व स्वास्थ्य संगठन ने प्राकृतिक औषधियों को मान्यता दी व अन्य चिकित्सा पद्धतियों जैसे चायनीज हर्बल, जापानी हर्बल, होम्योपैथिक, यूनानी आदि चिकित्सा पद्धतियों पर अनुसंधान को बढ़ावा देने पर जोर दिया है। इसी परिप्रेक्ष्य में यदि हम उपरोक्त वर्णित नकारात्मक पहलुओं का निवारण करना चाहें तो हमारा ध्यान आयुर्वेदिक में वर्णित पंचगव्य की ओर आकर्षित होता है। पंचगव्य का अर्थ गाय से प्राप्त पांच वस्तुओं – दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोबर है। पिछले कुछ वर्षों में देशी गायों से प्राप्त गोमूत्र पर वृहद अनुसंधान हुये हैं। जिस कार्य में विशेष रूप से सी. एस.आई.आर. की प्रयोगशाला, पन्तनगर विश्वविद्यालय, गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र एवं आई.वी.आर. आई. इज्जतनगर महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। यह एक सुखद आश्चर्य का विषय है कि देशी गाय के गोमूत्र पर क्षय रोग, कैंसर आदि रोगों के लिए अमेरिकन पेटेंट प्राप्त हुये हैं। विभिन्न अनुसंधानों से यह सिद्ध हुआ है कि गोमूत्र शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, जिससे शरीर को विभिन्न रोगों से मुक्ति मिलती है और कैंसर जैसे भयानक रोग भी ठीक होने लगते हैं। यह भी अनुसंधान से सिद्ध हुआ है कि यह क्षमता केवल देशी गाय के गोमूत्र में पायी

जाती है व इन पशुओं जैसे संकर गाय, विदेशी गाय, भैंस आदि के मूत्र में रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने वाले गुण नहीं पाये गये। आधुनिक तकनीकी का प्रयोग कर यह सिद्ध किया जा चुका है कि देशी गाय के गोमूत्र में एक विशिष्ट तत्व होता है जो शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाता है। यह भी सिद्ध किया गया कि गोमूत्र डी.एन.ए. की टूटन को ठीक कर देता है तथा जो कोशिकायें कैंसर बनाती हैं उन्हें आत्महत्या के लिए प्रेरित कर नष्ट कर देता है, जिससे कैंसर की बढ़वार रुक जाती है और कैंसर ठीक हो जाता है। इन अनुसंधानों का लाभ उठाकर देश की विभिन्न स्वयंसेवी संस्थायें गोमूत्र का प्रयोग कर विभिन्न प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियाँ बना रही हैं और उनका विपणन कर रहीं हैं। एक अनुमान के अनुसार गत वर्ष लगभग 250 करोड़ रुपये का व्यवसाय इन औषधियों से विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं के द्वारा किया गया। यह भी संज्ञान में आया है कि यह व्यवसाय 40 से 50 प्रतिशत की दर से वृद्धि कर रहा है और इस वर्ष अनुमानतः 500 करोड़ रुपये का व्यवसाय होने की उम्मीद है। आज विभिन्न संगठन देशी गाय का गोमूत्र चार रुपये से 10 रुपये प्रति लीटर तक गोपालकों से खरीद रहे हैं व उसे संस्कारित कर औषधि बनाकर 1000 रुपये लीटर तक बेचा जा रहा है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुये **एक त्रीस्तरीय प्रारूप** तैयार किया है जिसे गोपालक, शिक्षक युवा वर्ग, प्रबन्धक, तीनों को ध्यान में रखते हुये एवं सभी को यथायोग्य आय सुनिश्चित करते हुये तैयार किया गया है। जिसमें सभी को लाभ ही लाभ सुनिश्चित किया गया है। प्रारम्भ में यह मॉडल एक जिले, दो तीन तहसील या ब्लाक, कुछ चयनित गांव में लागू किया जा सकता है। इसका सफलता पूर्वक अनुपालन होने पर यही प्रारूप वृहद स्तर पर यथा प्रदेश एवं देश में लागू किया जा सकता है। इससे न केवल गरीबी दूर करने में मदद मिलेगी बल्कि, युवाओं एवं महिलाओं को ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर रोजगार भी उपलब्ध हो सकेगा।

	स्तर–1 : गाँव	**स्तर–2 : ब्लाक/तालुका**	**स्तर–3 : जिला**
कुल व्यय	20,000	50,000	2,00,000
पूंजी निवेश	–	50,000	2,00,000
मासिक आय	6,000–12,000	25,000–50,000	1–2 लाख
मानव शक्ति	एक/दो	4–5	20–30
रोजगार	10–20	40–50	20–30 (प्रत्येक जिले में)

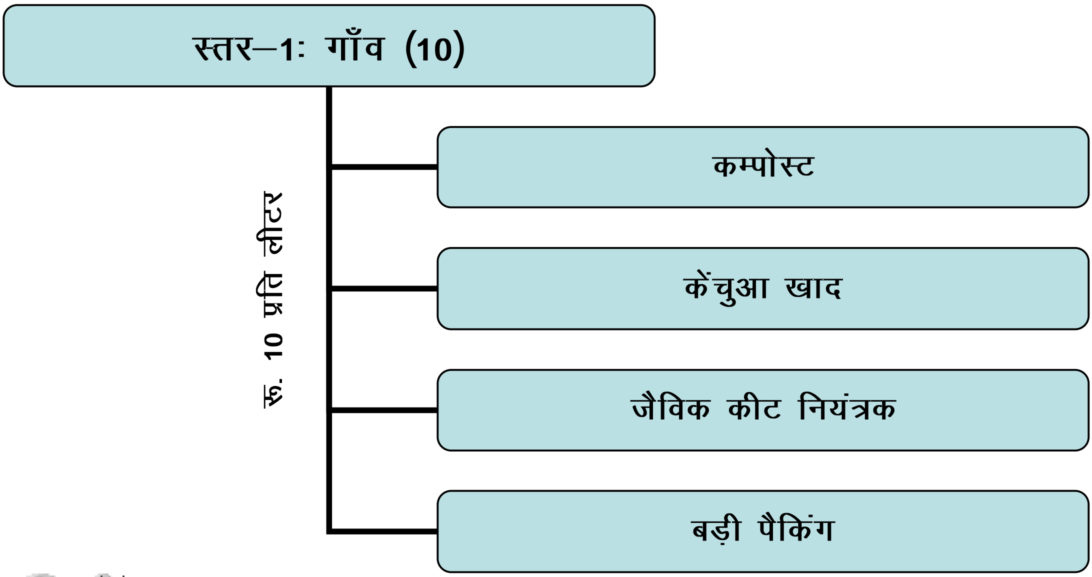

स्तर–2: ब्लाक/तालुका (10)

रु. 20 प्रति लीटर

- अर्क
- मंजन
- धूप
- साबुन
- पैकिंग

स्तर–3: जिला (1)

रु. 100 प्रति लीटर

- गुणवत्ता वर्धन
- जड़ी–बूटियों के साथ औषधि निर्माण
- पैकिंग
- प्रचार–प्रसार/विज्ञापन
- प्रबन्धन

भारत के बदलते परिवेश में गौ पालन और अधिक महत्वपूर्ण बनता जा रहा है, क्योंकि बढ़ती जनसंख्या के कारण जमीन का बँटवारा हो रहा है एवं यह छोटे–छोटे टुकड़ों में बँटती जा रही है, जिसमें ट्रैक्टर से कृषि कार्य करना असम्भव रहेगा। वहाँ पर बैल आधारित कृषि व्यवस्था ही अपनाना पड़ेगी। कम जमीन के रहते पशुपालन/गोवंश पालन ही मुख्य व्यवसाय रह जाता है जिससे खेतीहर मजदूर/छोटे किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। कम उत्पादन वाली या जो गायें दूध की दृष्टि से अनुपयोगी हो गयी हों उन्हें गौ सेवा सदन/गौशालाओं में रखा जा सकता है, जहाँ उनसे पंचगव्य आधारित आयुर्वेदिक दवाओं का उत्पादन किया जा सकता है। जिससे आय भी अधिक होगी, मानव स्वास्थ्य भी ठीक होगा व हमारी रसायन आधारित चिकित्सा प्रणाली पर निर्भरता भी कम हो जायेगी। वैसे भी एन्टीबायोटिक दवाओं का प्रभाव घटने लगा है तथा ये दवाएें अपना असर लगातार खोती जा रही हैं। ऐसे में आयुर्वेदिक आधारित दवाऐं ही रोगों के नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगीं। हमारे देश में 57 प्रतिशत भूमि पर खेती होती है, बाकी जमीन बेकार पड़ी है जिसका उपयोग चरागाह के लिए किया जा सकता है।

गौ पालन के लाभ

- ❖ गौ पालन से जहाँ व्यक्ति अपने परिवार के लिए पोषक खाद्य जुटा लेता है, वहीं दूध व उससे बने पदार्थ जैसे दही, मक्खन तथा घी बेचकर अतिरिक्त आय भी कर लेता है, साथ ही जमीन के लिए खाद भी बन जाती है।
- ❖ कीटनाशकों व रासायनिक खादों का प्रयोग कम होने से खाने–पीने की वस्तुओं में पर्यावरण प्रदूषण कम हो जायेगा।
- ❖ गोदुग्ध तथा गोमूत्र कई बीमारियों में अत्यधिक लाभदायक रहता है।
- ❖ दूध सुपाच्य होता है व उसमें उपस्थित विटामिन व अन्य अवयव रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाते हैं।
- ❖ गोबर विकिरण रोधी है। इसका उपयोग घरों के लेपन में प्रयोग होता है, जहाँ इसका विकिरण प्रतिरोधी प्रभाव देखा गया है। यह जापान के हिरोशिमा व नागासाकी नगरों में भी सिद्ध हो चुका है। भारत पर अणु बम का खतरा मडंरा रहा है, ऐसे में गोवंश से प्राप्त गोबर से दीवारें लेप कर विकिरण से बचने का एक सुगम, सस्ता व अच्छा उपाय और कोई नहीं हो सकता।
- ❖ गोवंश पालन व कृषि एक दूसरे के पूरक हैं। कृषि उत्पाद गोवंश का भोज्य है तो गोबर कृषि उत्पादन बढ़ाने में काम आता है।
- ❖ गौ पालन को बढ़ावा देने के लिए जहाँ स्वयंसेवी संस्थायें व आम जनता आगे आये व उचित कदम उठाये, वहीं जरुरी है कि सरकार की ओर से भी इसे विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाय।

अखिल भारतीय गोसेवा प्रमुख मा. दिनेश उपाध्याय जी ने गत माह इंदरपुर रुद्रपुर स्थित गौमा फार्म की गतिविधियों को देखा एवं गोवंश से सम्बंधित जानकारी ली। साथ में रामस्वरूप सिंह चौहान जी।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

वातव्याधि रुग्णानुभव

आयुर्वेदिक औषधि चिकित्सा करते समय पिण्ड यानी शरीर एवम् ब्रह्मांड यानी वातावरण का विशेष विचार किया जाता है। प्रत्येक ऋतु की अवस्था का मनुष्य शरीर पर जो प्रभाव होता है, उसके परिणामस्वरूप छिपी हुई व्याधि का ऊपर आना या जो समस्या हमें हो रही थी, वह धीरे–धीरे खत्म होना या कम होना भी होता है। उस समय हम अंधेरे में रहते हैं। हमें लगता है अब हमारा शरीर स्वस्थ हो गया है लेकिन लक्षणों में कमी आना, यह ऋतु परिवर्तन का परिणाम भी हो सकता है। अतः आयुर्वेदानुसार जिस ऋतु में दोषों के घटने–बढ़ने का विचार किया गया है उस आधार पर दोषों के प्रकोप अवस्था के पूर्व की अवस्था में ही उन्हें अधिक बढ़ने से पहले ही संभालना अत्यधिक लाभदायक होता है। दोषों के प्रकोप काल में बढ़े हुए दोषों को शरीर से बाहर निकालने हेतु शरीर शुद्धि भी बताई गई है। उदाहरण के लिए वर्षा ऋतु में वात का प्रकोप निसर्गतः होता है। अतः वैद्य की निगरानी में बस्ति लेने का विधान है। वातव्याधि के रुग्ण की चिकित्सा करते समय दवाई के साथ–साथ बस्ति लेने से विशेष लाभ होता है। अतः वातव्याधि के रुग्णानुभव इस लेख में दिए गये हैं। आगे आने वाली ऋतु **शरद ऋतु** है, जिसमें निसर्गतः शरीर में पित्त का प्रकोप होता है। बढ़े हुए पित्त को शरीर से बाहर निकालने हेतु विरेचन बताया गया है। क्रमशः उदाहरण देखें –

रुग्णा सौ. प्र. अ.,60, स्त्री, सन् 2010 में धंतोली स्थित दवाखाने में आई। दोनों हाथ और पैर की उंगलियों में शोथ और वक्रता के लक्षण थे। शूल भी बहुत होता था। किसी वस्तु को पकडने में दर्द होता था और चलते वक्त पैरों में शूल होता था। नीचे बैठते वक्त दर्द होता था। कभी–कभी अम्लपित की शिकायत भी थी।

नाड़ी – 68/मि नियमित, जिव्हा–ईषत् साम, मल – क्वचित् मलविबंध, मूत्र–सम्यक् एक लडकी – Normal Delivery रजोनिवृत्ति – 50 उम्र में, निदान – वातव्याधि।

रुग्णा की वातपित्तज प्रकृति को देखते हुए संधिवात की चिकित्सा दी गई। हिंग्वाद्य घृत, पंचतिक्त घृत, लघु सूतशेखर रस और स्नेहन –स्वेदन पूर्वक योग बस्तिक्रम भी ऋतु अनुसार दिया गया। खान–पान नियम, पथ्यापथ्य रुग्णा नियमित रूप से परहेज करती थी। इस वजह से उनको तुरंत उपशय मिला। पंचकर्म

चिकित्सा नियमित रूप से नहीं ले सकती थी पर दवाइयों का सेवन मात्र नियमित था, इसलिये उपशय (लाभ) शीघ्र मिला। 73 की उम्र में अपनी पंचगव्य चिकित्सा की वजह से वह काफी स्वस्थ हैं और समय मिलने पर पंचकर्म की चिकित्सा करवाने अपने दवाखाने में आती हैं।

क.ख.ग उम्र 59 वर्ष, पुरुष, 5 मार्च 2008 को गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के महल स्थित दवाखाने में कमर एवम् दाहिने पाँव में वेदना के कारण लंगडते हुए आए। बैठने के बाद उठते समय वेदना होती थी। सोने के उपरान्त करवट बदलते समय अत्यधिक वेदना होती थी। वेदना के कारण नींद भी ठीक से नहीं होती थी। काम पर जाने के लिए मुश्किल हो रही थी। गाड़ी चलाना तो दूर लेकिन पीछे बैठते समय भी एक ही तरफ दोनों पाव रखकर बैठना पड़ता था। पेट भी अनेक साल से ठीक से साफ नही होता था। रुग्ण सरकारी ऑडिट विभाग में कार्यरत थे। अतः बैठ कर कार्य करना होता था। ऑडिट करने हेतु बाहर गाँव जाना अनेक बार होता था। उस समय ज्यादातर समय एस. टी. बस से जाना एवम् जब जो उपलब्ध हो वो भोजन करना, ऐसा भी अनेक बार होता था। जैसे पोहा, समोसा, आलुबंडा इत्यादि।

नाड़ी – 84 / मि वातज, शब्द – स्पष्ट, जिव्हा – साम, आकृति – मध्यम, मल – दिन में 3–4 बार साम, मूत्र – सामान्य, अनियमित आहार एवम् काम के लिए सतत प्रवास, उंचे–नीचे रस्तों पर सतत प्रवास के कारण कुपित वायु संधियों में आश्रित होकर जकड़ाहट निर्माण हुई। वातशमनार्थ बस्ति एवम् मौखिक चिकित्सा दी गई। पाचन ठीक हो, इसलिए गुडार्द्रक योग भी बताया गया। पंचतिक्त घृत, महारास्नादि काढ़ा, बृहत वात चिंतामणि आदि औषधियों का सेवन किया। दशमूलकाढ़ा, पुनर्नवाष्टक काढ़ा, हिंग्वाद्य घृत का सेवन अनेक वर्ष ऋतुओं के आधार पर भी कराया गया। वैद्य द्वारा लगातार लगभग 4 माह बस्ति ली। धीरे–धीरे जाड़यता कम हुई। सभी संधियाँ अच्छे से काम कर रही हैं। उस समय से रुग्ण नियमित औषधि सेवन यथा आवश्यक करते हैं। ऋतु अनुसार बस्ती लेते हैं। अब 13 साल बाद भी उन्हें कोई संधियों में पुनः कष्ट नहीं हुआ।

रूग्ण दी. व्यं. ह., 66, पुरुष धंतोली स्थित गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, में 3 अगस्त 2017 को आए। तब उन्हें चलने पर पैरों में 5 दिनों से तीव्र शूल था। एक पैर भी सामने उठाने के लिए तकलीफ होती थी। रुग्ण का इतिहास मालूम करने पर पता चला कि गत 30 वर्ष से उनके पूरे शरीर पर बीच–बीच में लाल चकत्तों और दरारें युक्त त्वचा थी। कहीं–कहीं त्वचा की रूंसी निकलती दिखी, तब खुजली कम प्रमाण में थी। Allopath और Homeopathy की चिकित्सा से उन्हें नैमित्तिक लाभ मिलता रहा। किंतु स्थायी लाभ कभी नहीं मिला। रुग्ण की परीक्षा करने के बाद पता चला कि उनकी जिव्हा बहुत ही साम थी। मोटी सफेद परत जिव्हा पर थी। रुग्ण की भूख, नींद और मलप्रवृत्ति नियमित होने पर भी यह लक्षण दिखे। रुग्ण योग शिक्षक होने से नियमित योगासन, प्राणायम करते थे। वजन 71 किलो था। रुग्ण की उम्र और व्याधि की तीव्रता देखकर वात–पित्त की चिकित्सा की। हिंग्वाद्य घृत, पंचतिक्त घृत, रक्तशोधक काढ़ा, महारास्नादि काढ़ा, हरडेचूर्ण और गोमूत्र अर्क सेवनार्थ दिये। पथ्य का अमल करने के लिए कहा।

15 दिन में चलने के दौरान

कष्ट थोड़ा कम हुआ। एक महिने में चलने में जो शूल था वह अत्यधिक कम हुआ, लेकिन Psoriasis की चिकित्सा जारी रखनी पड़ी। रुग्ण की छह महिनों में रामटेक के गढ़ तक चलने की क्षमता पाई गई। रुग्ण पथ्य के बारे में सावधान नहीं है। परहेज ठीक से करने की क्षमता न रहने से Psoriasis की चिकित्सा अब भी जारी है। लेकिन मात्र एक महिने में Psoriatic Arthritis से उन्हें पूर्णतः उपशय मिला। यह पंचगव्य चिकित्सा की उपलब्धि है। रूग्ण भी संतुष्ट है।

सौ. मा. पा., 48, स्त्री रुग्णा मध्य वयस्क है। धंतोली स्थित गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, के चिकित्सा केन्द्र में आई तब उन्हें चलने–फिरने और नीचे बैठने में बहुत कष्ट होता था। दोनों जानुसंधियों में तीव्र शूल, संधिशूल–गत 10 महिनों से था। बहुत थकान–सी हरदम लगती थी। काम की गति भी कम हुई थी। नौकरी भी जोखिम वाली रहने से मानसिक तनाव से गुजर रही थी। रुग्ण का इतिहास पूछने पर पता चला 12 वर्ष से उन्हें 1. Hypertension की बीमारी है। दवाई शुरू है। 2. Thyroid भी 2 बार Detect हुआ और दवाई लेने पर उन्हें पूर्णतः उपशय मिलने से उनकी दवाई बंद है। रुग्ण शासकीय एयर पोर्ट कस्टम ऑफीसर की नौकरी करती है। आठ घंटा बैठकर ही काम करना पड़ता है। नौकरी जोखिम वाली रहने से मानसिक तनाव से गुजर रही थी। मासिक स्राव 7–8 दिन रहता था। शिफ्ट डयुटी रहने से अनियमित खान–पान और असमय नींद होती थी। 5. रुग्णा Spondylitis (मन्याशूल) से भी पीड़ित थी। रुग्ण परीक्षण और निदान–नाड़ी–74 / मि. नियमित,

जिव्हा–ईषत् साम, मल– सम्यक्, मूत्र–सम्यक्, निद्रा– सम्यक् रुग्णा की अवस्था देखकर एवं उसके काम का स्वरूप देखकर हिंग्वाद्य घृत, कामधेनु, हल्दी घनवटी, इन दवाईयों से उपचार आरंभ किया। पंचकर्म में स्नेहन + स्वेदन पूर्व योग बस्ति क्रम का प्रयोग किया। उससे 15 दिनों में शरीर शूल में 60% राहत मिली। जानुसंधिशूल कम हुआ। रुग्णा को शारीरिक शूल से बड़ी राहत मिली, थकावट भी अब नहीं होती। माहवारी में 3–4 दिन में स्राव बंद होता है। मिले हुए फायदे से रूग्णा संतुष्ट है।

अ.ब.क उम्र 37 वर्ष स्त्री 16 / 11 / 2011 को रुग्णा कामधेनु पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र में निम्नलिखित तकलीफ चार साल सहन करने के उपरान्त दिखाने आई। उस समय सर्वांग में वेदना, अंदर से गर्मी लगना, हाथ एवम् पाँव की उंगलियाँ अपने आप तिरछी होना, धूपकाल में पादतल में अंगार होना, माहवारी एक दिन तक रहना आदि लक्षण थे। दोनों वक्षस्थलों में कठोरता एवम् दर्द होता था। सभी संधियों में वेदना एवम् मुखशोष (मुँह सूखना) भी हो रहा था। पाठशाला की उम्र में मलेरिया एवम् Typhoid (आंत्रिक ज्वर) हुआ था। धूप काल में मुँह में फोडे एवम् नासिका से खून आना कभी–कभी होता था।

पिताजी को सायटिका एवम् माताजी को उच्च रक्तदाब, मधुमेह एवम् उनकी हदयशस्त्रक्रिया (Bypass एवम् Angioplasty) हुई थी। रुग्णा शाकाहारी गृहिणी है। नाडी – 72 / मि वात–कफज, जिव्हा–साम, मल–1 बार, क्वचित बद्धता, मूत्र–अविशेष शरीरभार – स्पर्श शीतोष्ण, मासिक स्राव–एक दिन, कृष्णवर्णीय। रुग्णा के सभी लक्षणों को एवम् परीक्षणोपरान्त उष्णवात की चिकित्सा की गई। लघुसूतशेखर, पंचतिक्त घृत, महायोगराज गुग्गुळ, महारास्नादि काढ़ा एवम् सर्वांग स्नेहन–स्वेदन के साथ अनुवासन एवम् निरूह बस्तियाँ भी दी गईं। चिकित्सा शुरू करने के उपरान्त सर्वप्रथम उंगलियों का तिरछा होना एवम् वक्षस्थल शूल धीरे–धीरे कम हुआ। कठोरता एक माह में लगभग खत्म हुई। पंचकर्म करने के उपरान्त अनुवासन बस्ति धारण काल धीरे–धीरे बढ़ा। तीन माह में वातजलक्षण धीरे–धीरे खत्म हुए। तदुपरान्त आने वाले धूप काल में भी रुग्णा को ऊष्मा के लक्षणों में अच्छा उपशय ध्यान में आया। 32 साल की उम्र में ही रुग्णा अनेक लक्षणों से व्यथित थी। अब दस साल से रुग्णा नियमित रूप से चिकित्सा केन्द्र में आती है। ऋतु के अनुसार पंचकर्म चिकित्सा स्वास्थ्य रक्षणार्थ करती है। अब वह पूर्व की सभी बीमारियों से मुक्त एवम् संतुष्ट है।

पूजा पाराशर (कवयित्री, स्वतंत्र लेखिका)

आज का व्यक्ति आसमां से जुड़ गया, जहां ऊंची-ऊंची इमारतें, बड़ी-बड़ी कारें और दिन के 10 से 15 घंटे मशीनी यंत्रों का साथ, जिनके बिना व्यक्ति अपना जीवन निरर्थक समझने लगा। अब ऐसा बदलाव जहाँ न जमीन की बात है न जमीनी की, तो क्यों नहीं विनाश होगा? क्यों नहीं उस परमात्मा का कहर बरसेगा? 'जिसने' सदा क्षमा किया है, सदा किसी-न-किसी संकेत द्वारा यह सिखाता रहा कि अब मत भागो, संभल जाओ....!

तुल्यनामानि देयानी त्रीणि तुल्यफलानि च।
सर्वकामफलानीह गावः पृथ्वी सरस्वती।।
(महाभारत, अनु. ६६७४)

अर्थात गाय, भूमि और सरस्वती, तीनों नाम एक समान हैं। तीनों का दान करने से समान फल की प्राप्ति होती है। यह तीनों मनुष्य की संपूर्ण कामनाएं पूरा करती हैं, परंतु आज ये तीनों दान लगभग समाप्त हो चुके हैं। शायद यही कारण है कि आज काल के विकराल रूप की भयावह स्थिति में सभी कामनाएं विफल हो रही हैं।

जिस गृह में गोमाता का वास है, वहां कोई भी विषाणु का प्रवेश नहीं हो सकता। गाय के आसपास का स्थान सदा शुद्ध रहता है। वहाँ गोमूत्र और गोबर से उत्सर्जित गंध आस-पास की जहरीली वायु को अवशोषित कर वातावरण को सदा स्वास्थ्यवर्धक रखती है ।

आज संपूर्ण विश्व अनेक भयानक बीमारियों से पीड़ित है। इस परिस्थिति को देखते हुए पुरानी बातें जो हमने अपने दादा-दादी से सुनी, स्वयं भी बचपन में अंशतः अनुभव किया या आज मात्र पुस्तकों में पढ़ने को मिलती हैं, उनकी आवश्यकता सर्वप्रथम प्रतीत हो रही है। यदि आज पूर्व काल की भांति गौओं की संख्या और उनकी घर-घर में उपस्थिति होती तो इन बीमारियों के भय से किसी प्रकार की डरने की आवश्यकता नहीं होती।

जिस प्रकार मां प्रतिक्षण अपने बच्चों की रक्षा और संरक्षण में सदा सचेत और तत्पर रहती है उसी प्रकार गोमाता भी अपने परिवार अर्थात वह जहां निवास करती है, अपने चारों ओर सुरक्षा कवच की भांति सबकी रक्षा करती है, चाहे वह स्वास्थ्य संबंधी कितनी ही बड़ी समस्या क्यों न हो।

यदि कल्पना करके देखें कि दूध न होता, दही न होता और घी न

होता तो हमारे भोजन का स्वाद तथा हमारा तन और हमारा मन कैसा होता? एक समय था जब व्यक्ति का जीवन आधार गाय–बैल ही होते थे। जिसके पास यह धन था, वह सबसे ज्यादा समृद्ध समझा जाता था। सत्य भी यही है कि हमारा देश सदा से समृद्ध और संपन्न इसलिए रहा क्योंकि यहां गाय–बैलों की पूजा होती थी, उन्हें हर घर में एक सदस्य के रूप में स्थान मिलता था, जिस घर में उनका अभाव रहता, वह घर दरिद्र माना जाता था। समय बदलाव के साथ व्यक्ति की सोच बदलती गई, वह भावात्मकता से धीरे–धीरे दूर होता गया। वह आधुनिकता में इस प्रकार बदलता गया कि भावात्मकता के स्थान पर मशीनें और क्रत्रिम जीवन को अपनाता गया। इसी बदलाव ने उसके तन–मन के साथ पूरे वातावरण को परिवर्तित कर दिया।

एक समय था जब चारों और शुद्ध हवा थी, हरियाली थी, गाय–बकरी सुबह–शाम आस–पास चरते नजर आते थे। पशु–पक्षी वातावरण को शुद्ध रखते थे। गोबर से बने कंडों (उपला) की आग पर हाथ की रोटी बनाई जाती थी, जो शरीर को ताकतवर बनाने के साथ–साथ व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती थी। शीत ऋतु में इन्हीं कंडों की अग्नि को घेर कर पूरा परिवार स्वयं को सर्दी से राहत पहुंचाता था। गर्माहट से स्वयं को राहत पहुंचाते हुए परिवार के सदस्य आपस में हंसी–ठिठोली करते थे, स्वस्थ परिवार के साथ सुखी परिवार हुआ करते थे। व्यक्ति के पास बहुत पैसा हो या न हो परंतु हंसी थी, प्रेम था, जुड़ाव था, जिसे आम भाषा में जमीनी जुड़ाव कहते हैं। वह जमीनी जुड़ाव जुड़ा था जमीन से, गाय–बैलों से और पेड़–पौधों से।

आज का व्यक्ति आसमां से जुड़ गया, जहां ऊंची–ऊंची इमारतें, बड़ी–बड़ी कारें और दिन के 10 से 15 घंटे मशीनी यंत्रों का साथ, जिनके बिना व्यक्ति अपना जीवन निरर्थक समझने लगा। अब ऐसा बदलाव जहाँ न जमीन की बात है न जमीनी की, तो क्यों नहीं विनाश होगा? क्यों नहीं उस परमात्मा का कहर बरसेगा? 'जिसने' सदा क्षमा किया है, सदा किसी–न–किसी संकेत द्वारा यह सिखाता रहा कि अब मत भागो, संभल जाओ....! परंतु व्यक्ति आधुनिकता की अंधी दौड़ में बस भागता ही गया। एक दिन ऐसा आया कि उसने अपना विकराल रूप दिखाया और सभी को डर से अपने अतीत की ओर देखना पड़ा। एक बार फिर व्यक्ति को इस जमीन से जुड़ना पड़ा।

सच कहते हैं, जब तक चोट न लगे तब तक व्यक्ति नहीं समझता। आज गोमाता के दूध की अवश्यकता है, क्योंकि उसके दूध में रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की शक्ति है। सभी प्रकार की भयावह बीमारियों से लड़ने की शक्ति है। गोमूत्र की मांग तो इतनी बढ़ गई कि व्यक्ति आज इसे 500 रुपये प्रति लीटर खरीद रहा है। आज गाय के घी की आवश्यकता है......। इसीलिए आज व्यक्ति को गोमाता की सबसे ज्यादा आवश्यकता प्रतीत हो रही है। आज घर से बाहर ही नहीं घर के अंदर भी पेड़–पौधे लगाने की आवश्यकता आन पड़ी है। आखिर यह परिस्थिति क्यों बनी? क्योंकि व्यक्ति जब ईश्वर से विमुख होता गया, प्रकृति से संवेदनहीन होता गया, स्वयं से बहुत दूर हो गया, तब ईश्वर को भी विवश होना पड़ा। कैंसर जैसी बीमारी भी मानव जाति को बहुत बड़ी सीख दे रही है।

आज समस्यायें बहुत चुनौतीपूर्ण बनकर सामने आई हैं, परंतु समस्या ने व्यक्ति को उसके स्वयं से जोड़ना शुरु किया है। आज वह फिर उसी भूमि पर उसी जगह खड़ा है जहां से उसने अपनी यात्रा शुरु की थी। सब कुछ होकर भी वह लाचार है, कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि 'वह' सर्वशक्तिमान परमात्मा दिखाना चाहता है, बताना चाहता है और स्वयं से जोड़ना चाहता है। हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता और समाज बहुत ही प्राचीन है। हमारे वेदों में प्रत्येक क्षण की महत्ता और हर कार्य के कारण का भी उल्लेख मिलता है। विश्व का सर्वप्रथम लिखित वेद ऋग्वेद में भी गोमाता की महत्ता का वर्णन मिलता है। भगवान इंद्र अपनी सभा में घोषणा करते हुए कहते हैं कि हे पोषण करने वाले व्यापक तथा

शत्रु–दल पर आक्रमण करने वाले वीरवर! हमारे कर्म, गौ को प्रमुख स्थान देकर नियुक्त कीजिये और हमें कल्याणमय स्थिति में कीजिये जिससे हम सभी सुखी रहें। अर्थात गाय कि महिमा समझाइए। वैदिक मंत्र इस प्रकार है–

उत नो धियो गोअग्राः
पूषन विष्नवेवयावः।
कर्ता नः स्वस्तिमतः।।

(ऋग्वेद १।९०।५)

देवताओं, ऋषि–मुनियों ने भी गोमाता की महिमा का वर्णन किया है। उसकी सेवा से बढ़कर कुछ नहीं बताया है। वह अमूल्य धन है, वह संपूर्ण औषधि है। उसमें संपूर्ण देवी–देवताओं का वास है एवं वह स्वयं में पूर्ण ब्रह्मांड है। जिसने भी गोमाता को हृदय से माना है, उसकी श्रद्धापूर्वक पूजा की है, उसने स्वयं को पा लिया है। महर्षि च्यवन तपस्या करने के लिए जल के अंदर 12 वर्षों तक रहे। एक बार कुछ मछुआरों ने जल में जाल बिछाया। महर्षि च्यवन के साथ कुछ मछलियां भी जाल में फँसकर बाहर आ गईं। मछुआरों ने जब यह देखा तो महर्षि से क्षमा याचना करने लगे। महर्षि मछलिओं की भांति लंबी– लंबी सांस लेने लगे। मछुआरों ने जब इसका कारण पूछा तो ऋषि ने कहा कि ये मछलियां जीवित रहेंगीं तो मैं जीवित रहूंगा अन्यथा इनके साथ मैं भी अपना शरीर त्याग दूंगा। मछुआरे यह बात सुनकर शीघ्र ही राजा के पास गए और सारी घटना महाराज नहुष को सुनाई। राजा नहुष च्यवन मुनि के समक्ष पहुंचे और विनती की कि आपके लिए क्या सेवा की जाए? मुनि ने कहा इन मछुआरों ने बहुत मेहनत की है इसलिए आप इन्हें मेरा और मछलियों का मूल्य चुका दीजिए। राजा ने स्वर्ण मुद्राएं, आधा राज्य यहाँ तक कि अंत में संपूर्ण राज्य देकर महर्षि च्यवन का मूल्य लगाना चाहा,

परंतु मुनि ने अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि आपका आधा या पूरा राज्य मेरा उचित मूल्य नहीं है। तभी गाय के पेट से जन्मे गौताज मुनि वहां पहुंचे और उन्होंने राजा से कहा कि ऋषि– मुनियों का कोई मूल्य नहीं होता, वे अमूल्य होते हैं। इसी प्रकार गाय भी अमूल्य होती है, उसका भी कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता। इनकी कीमत में आप एक गाय दे दीजिए।

राजा ने महर्षि से कहा कि मैंने एक गौ देकर आपको खरीद लिया है। मैंने आपका यही उचित मूल्य समझा। महर्षि ने कहा– आपने मुझे उचित मूल्य देकर खरीदा। मैं इस संसार में गौओं के समान कोई दूसरा धन नहीं समझता। महर्षि च्यवन ने मछलियों के साथ मछुआरों को स्वर्ग जाने का आशीर्वाद दे दिया। अतः कहने का तात्पर्य है कि गोमाता अमूल्य है, सर्वगुणों की खान है, उसमें ईश्वर तत्व विराजमान है। बस, एक श्रद्धा भाव ही है जो उसकी महत्ता से परिचित करा सकता है और उसके गुणों का अनुभव करा सकता है।

आज का समय हमें जागने– जगाने का है और कुछ कदम पीछे हटने का है, प्राचीन परंपराओं और मान्यताओं को अपनाने का है। आधुनिकता अपनाना आवश्यक है परंतु उपयोगी, मानवीय, सार्थक और पूज्यनीय बातों को छोड़कर नहीं, अपितु उन्हें अपनाते हुए। आधुनिक हर उस चीज को अपनाते हुए आगे बढ़ना है जिसमें हमारा, हमारे समाज का और हमारे देश का हित हो। परिवर्तन, उन्नति अवश्य लानी है, परंतु स्वस्थ मन, स्वस्थ तन और स्वच्छ वातावरण के साथ, जहाँ अपना वही प्राचीन समृद्ध भारत एक बार पुनः सोने की चिड़िया बने, जिसकी चहचहाहट हर व्यक्ति के चेहरे पर चमक के साथ एक मुस्कान दे और अपने सभी पड़ोसियों को मधुर संगीत...।

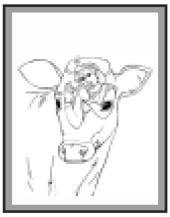

उत्तर गुजरात प्रांत, गोरक्षा विभाग की बैठक संपन्न

विश्व हिन्दू परिषद–गोरक्षा विभाग–भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन समिति उत्तर गुजरात प्रांत द्वारा गत 31 अगस्त को आल्फा गीर गौशाला–ओगणज–कर्णावती में एक दिवसीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में संत पूज्य विरल बापू, केंद्रीय मंत्री (गोऱक्षा विभाग) सुरेन्द्र जी लाम्बा, गोरक्षा क्षेत्र अध्यक्ष श्री प्रदीप भाई व्यास, धर्म यात्रा महासंघ क्षेत्र अध्यक्ष श्री राजूभाई ठाकर, विहिप प्रांत उपाध्यक्ष एवं आयाम के संरक्षक श्री अशोक भाई पटेल, विहिप प्रांत सहमंत्री श्री मुकेश भाई गोर, प्रांत कोषाध्यक्ष श्री शशिभाई पटेल, गोरक्षा प्रांत प्रमुख किशोर भाई वाटलिया, प्रान्त सह गोऱक्षा प्रमुख नवीन भाई पटेल एवं कल्पेश भाई के साथ ही प्रांत टोली एवं जिला टोली के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

गौ पूजन एवं गौ आरती के पश्चात् बैठक का शुभारम्भ संत श्री विरल बापू–अंतिम धाम आश्रम के आशीर्वाद से हुआ। उन्होंने सनातन संस्कृति की मूल आधार गाय के धार्मिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं का वर्णन किया तथा कार्यकर्ताओं को गाय की सेवा एवं समर्पण हेतु प्रेरित किया। सुरेन्द्रजी लाम्बा ने संगठनात्मक विषयों, दायित्व बोध, गौ विज्ञान परीक्षा का महत्व, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के गौ सेवा गति विधि आयाम के साथ संकलन एवं समन्वय तथा वृंदावन में अखिल भारतीय संच बैठक में लिए गए निर्णयों पर विस्तृत जानकारी दी।

श्री मुकेश भाई गोरे ने गौ संरक्षण विभाग की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की तथा बताया कि इसका विस्तार कैसे किया जा सकता है।

श्री किशोर भाई वाटलिया की ओर से आगामी कार्यक्रमों, योजनाओं एवं लक्ष्यों की घोषणा और गोपाष्ठमी सप्ताह के आयोजन में विश्व हिन्दू परिषद के सभी आयामों के साथ–साथ समाज को साथ जोड़कर गोहत्या निषेध के कठोर कानून को सख्ती से लागू करने और गौ माताओं के लिए गोचरभूमि मुक्त कराने हेतु प्रखंड स्तर–जिला स्तर एवम प्रांत स्तर से लेकर राजपाल, मुख्यमंत्री तक आवेदन देने की विस्तृत चर्चा की गयी।

प्रस्तुति – सुरेन्द्र लाम्बा

हाइवे बनाने वाली कंपनियां बेसहारा गोवंश के लिए
सीएसआर फंड से खोलेंगीं गोशालायें

वाराणसी नेशनल हाइवे पर बेसहारा गोवंश के कारण लगातार हो रहे हादसों में कमी लाने के उद्देश्य से **एनएचएआइ** की ओर से पहल की गई है। तय हुआ है कि हाइवे का निर्माण कराने वाली कंपनियों को ही सीएसआर (कारपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी) फंड से गोशाला स्थापित करनी होगी। कंपनियां गोवंश के खान–पान से लेकर उनकी सेहत तक की चिंता करेंगीं। प्राधिकरण के शीर्ष अधिकारियों की तरफ से इसके लिए वाराणसी, प्रयागराज, आजमगढ़ व गोरखपुर समेत पांच इकाइयों से जुड़ीं दर्जन भर कंपनियों के अधिकारियों के साथ बैठक कर कार्ययोजना मांगी गई है। आश्रय क्षेत्रों का क्षेत्रफल 0.21 से 2.29 हेक्टेयर तक होगा। प्राधिकरण गोशाला के लिए कंपनियों को निःशुल्क भूखंड उपलब्ध कराएगा। हाइवे के किनारे पर्याप्त खाली जमीन है, इसलिए जमीन मिलने में समस्या नहीं आएगी। देश भर में एनएचएआइ की 1.42 लाख किलोमीटर लंबी सड़कें हैं। इस योजना को बन चुकी सड़कों पर लागू करने का प्रयास है, साथ ही नए प्रोजेक्टों में अनिवार्य रूप से प्रभावी करने की तैयारी है।

यूपी–हरियाणा सीमा पर प्रभावी हो चुकी गोशाला योजना

पायलट प्रोजेक्ट के रूप में पशु आश्रय स्थल का निर्माण यूपी–हरियाणा सीमा पर नेशनल हाइवे–334 बी के खरखौदा बाईपास और एनएच–148 बी के भिवानी –हांसी खंड पर हांसी बाईपास के मध्य हो चुका है। इसके लिए दिसंबर 2024 में एनएचएआइ ने गवार, कंस्ट्रक्शन वारकर लिमिटेड के साथ एमओयू किया है। कंपनी गोवंश की देखभाल कर रही है। घायल गोवंश के परिवहन और उपचार के लिए मवेशी एंबुलेंस की भी व्यवस्था है।

पूर्वी क्षेत्र के हाइवे पर जमीन की कोई समस्या नहीं है। निर्माण कंपनियों को निर्देश जारी हुआ है कि वे गोशाला के निर्माण के लिए प्रस्ताव दें। जहां सड़कें नई बनाई जाएंगी, वहां पर तो योजना को शत प्रतिशत प्रभावी करने का प्रयास किया जाएगा।

– एसके आर्या, क्षेत्रीय अधिकारी, पूर्वी क्षेत्र, एनएचएआइ।

हाइवे नेटवर्क बढ़ा, लेकिन सड़क सुरक्षा की स्थिति बेहद कमजोर

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने अभी तक वर्ष 2022 के हादसों की रिपोर्ट सार्वजनिक की है, जिसके अनुसार देश में करीब 4.61 लाख सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिसमें करीब 1.68 लाख लोगों की जान गई है जबकि करीब 4.02 लाख लोग घायल हुए। राष्ट्रीय राजमार्ग देश के कुल सड़क नेटवर्क का 2.7 प्रतिशत हिस्सा है, लेकिन 40 प्रतिशत यातायात इन पर होता है।

– संग्राम सिंह, जागरण

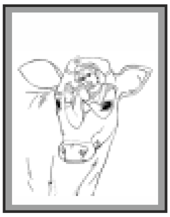

रेवाड़ी में गोरक्षकों ने लगाई जान की बाजी तस्करों ने चलती गाड़ी से फेंके कई गोवंश

रेवाड़ी (हरियाणा)। गोतस्करों पर शिकंजा कसने में जिला पुलिस किस तरह से गंभीर है, उसका अंदाजा गत माह हुए घटनाक्रम से आसानी से लगाया जा सकता है। गोतस्करों ने रोहतक नेशनल हाइवे पर गोवंशों को ले जा रही पिकअप गाड़ी का पीछा करना शुरू किया, तो तस्करों ने गोरक्षकों की गाड़ी पर ही कांच की बोतलें फेंकना शुरू कर दिया साथ ही एक के बाद एक चार गोवंशों को चलती गाड़ी से फेंक दिया। चारों गोवंश जख्मी हो गए। डायल –112 पर कॉल करने के बाद पुलिस पहुंच तो गई; परंतु गोतस्करों को काबू करने के कोई खास प्रयास नहीं किए। गोतस्कर एक गोवंश को लेकर फरार होने में कामयाब हो गए। इतना ही नहीं, बाद में पुलिस ने केस दर्ज करने की बजाय मामले को रफा–दफा कर दिया।

पिकअप में पांच गोवंश निर्ममता से भरे हुए थे

रात में बजरंग दल के सदस्य व गोरक्षक टिंकू अपनी टीम के साथ गाड़ी लेकर रोहतक हाइवे पर गोकलगढ़ के पास मौजूद थे। इसी दौरान संदेह के आधार पर उन्होंने पिकअप गाड़ी के पीछे अपनी गाड़ी लगा दी। पिकअप गाड़ी में पांच गोवंश निर्ममता से भरे हुये थे। पीछा करना शुरू करने के बाद पिकअप में सवार लोगों ने गाड़ी का डाला खोलकर एक के बाद एक गोवंश को गाड़ी से नीचे फेंकना शुरू कर दिया। तीन को गंगायचा टोल प्लाजा के पास व एक को मस्तापुर के पास चलती पिकअप गाड़ी से नीचे फेंक दिया। गोरक्षकों ने गाड़ी का पीछा करते–करते डायल–112 पर सूचना दी। इसी बीच पिकअप में सवार लोगों ने टिंकू की गाड़ी के सामने कांच की बोतलें फेंकना शुरू कर दिया। इससे उनकी गाड़ी का टायर फट गया। इसके बाद गाड़ी पलटते–पलटते बच गई। सूचना देने पर पुलिस मौके पर पहुंची, परंतु तब तक गोतस्कर खेड़ा आलमपुर व आशियाकी गांव के रास्ते से पटौदी की ओर भागने में कामयाब हो गए। गोरक्षकों के अनुसार भागते समय पांचवां गोवंश गाड़ी से आधा बाहर लटक रहा था। गोरक्षकों ने पिकअप से गिरने के बाद जख्मी हुए गोवंशों को झज्जर गोशाला भिजवा दिया।

गोतस्करों का पीछा गाड़ी का टायर फटने तक किया

गौर करने लायक बात यह है कि गोरक्षकों ने जान की बाजी लगाकर गोतस्करों का पीछा गाड़ी का टायर फटने तक किया। पुलिस सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंच तो गई, परंतु नाकेबंदी करते हुए गोतस्करों को काबू करने की दिशा में कोई प्रयास नहीं किए। गोरक्षकों का मानना है कि अगर पुलिस जरा सी तत्परता दिखाती, तो गोतस्करों को काबू किया जा सकता था। नजदीक पहुंचने के बाद पुलिस से गोतस्करों का बचकर निकल जाना पुलिस की कार्यशैली पर सवालिया निशान लगा रहा है।

केस के लिए शिकायत का इंतजार

चार गोवंश जख्मी होकर झज्जर गोशाला पहुंचे हैं, परंतु पुलिस ने केस तक दर्ज करना जरूरी नहीं समझा। बजरंग दल के सदस्य और गोरक्षक टिंकू ने बताया कि वह केस दर्ज कराने के लिए सदर थाना गए थे। वहां जवाब दिया गया कि गाड़ी का पीछा करने से पहले पुलिस को सूचना देनी चाहिए थी। केस दर्ज करने की बजाय उसे भविष्य में पहले सूचना देने की बात कहते हुए बैरंग लौटा दिया। यह पुलिस की गोतस्करी रोकने के प्रति सजगता की पोल खोलने के लिए काफी है।

साभार – हरिभूमि

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

ARTIFICIAL INTELLIGENCE (AI)
A NEW HORIZON FOR COW CONSERVATION

India's relationship with the cow goes far beyond agriculture and milk. Indigenous cows (Bos Indicus) are interwoven with ecological sustainability, human values and cultural traditions. Yet, in the last century, these breeds have faced sharp decline due to crossbreeding, industrial dairy models and lack of systematic conservation. At the same time, modern science is discovering new health and ecological benefits of native cows, such as the value of A2 milk, Medicinal potential of cow by-products and their low ecological footprint.

In this context, Artificial Intelligence (AI) emerges as a transformative tool. By integrating data science, machine learning and precision technologies, AI can open new frontiers in cow conservation and cow science, ensuring that indigenous breeds not only survive but thrive in the future.

1. AI in Breed Identification and Conservation

One of the challenges in conserving Indian cows is the accurate identification of breeds. India has more than 40 recognized indigenous cow breeds, each adapted to specific ecosystems. Traditional identification depends on manual observation of physical traits, which is often inconsistent.

AI-based image recognition systems can analyze photos and videos of cows to identify breeds with high accuracy, even distinguishing subtle differences in horns, skin patterns or hump size. By creating large

Digital Breed Databases, conservation agencies can track populations, identify endangered breeds and design targeted policies accordingly.

2. Precision Health Monitoring with AI

Health is central to both cow welfare and scientific research. AI-driven wearable sensors, attached to a cow's ear, neck or tail can continuously track body temperature, movement, rumination patterns and even detect diseases at an early stage. Machine

learning models analyze this data to alert farmers and veterinarians about illnesses such as mastitis or foot-and-mouth disease before symptoms visibly appear.

For indigenous breeds, which are naturally disease-resistant but still vulnerable to epidemics, such preventive monitoring is indeed crucial. It reduces mortality, improves productivity and strengthens trust in native breeds as economically viable.

3. AI in Milk Quality and Nutritional Analysis

Recent research highlights the unique benefits of A2 milk from Indian cows. AI-powered spectroscopy and machine learning models can quickly test milk samples for protein type, fat content and adulteration etc. By creating a digital traceability system, consumers can be assured of milk purity, while farmers receive fair value for high-quality indigenous cow milk.

Such technology also supports research on cow science, allowing large datasets to be analyzed on nutritional differences between A2 and A1 milk and their health outcomes.

4. Optimizing Breeding Programs

Traditional breeding has relied on intuition and limited data. With AI, genetic information, health history and productivity data of cows can be analyzed to design optimal breeding programs. AI models can help suggest pairings that maintain genetic diversity while improving traits like milk yield, disease resistance or adaptability.

This helps avoid over-reliance on exotic breeds and strengthens indigenous populations, aligning with both conservation and productivity goals.

5. Environmental Applications: AI and Cow Dung Economy

Cow dung has long been used in India as fertilizer, fuel and now as a source for biogas and bio-manure. AI can optimize this "Circular Economy" by predicting dung output, analyzing its quality and designing efficient biogas plants. Smart models can also calculate how dung usage reduces chemical fertilizer dependence and greenhouse gas emissions.

Such research strengthens the argument that indigenous cows are not only culturally significant but also vital for climate-resilient agriculture.

6. Data Integration and Policy Making

A major gap in cow conservation is the absence of unified data. AI-based platforms can integrate information on population trends, disease outbreaks, milk quality, dung utilization and market dynamics. Governments and NGOs can then use predictive analytics to design policies, such as identifying regions where particular breeds are declining or forecasting the impact of subsidies.

By converting scattered observations into actionable insights, AI transforms conservation into a data-driven mission.

7. Challenges and Ethical Considerations

While AI offers immense promise, there are challenges too. Many rural farmers lack access to digital technologies, creating a digital divide. Training and awareness are indeed necessary for AI-based tools to reach grassroots levels. Moreover, ethical considerations such as data privacy, animal welfare and over-commercialization must be addressed. The aim should remain balanced: using AI not to industrialize indigenous cows, but to preserve their ecological and cultural essence.

Therefore, Artificial Intelligence is redefining cow conservation and cow science in India. From breed identification and disease prediction to milk analysis and dung economy, AI offers tools to bridge tradition and modernity. Indigenous cows, once undervalued in industrial models, can certainly regain prominence as sustainable, healthy and ecologically friendly assets, when supported by AI-driven insights.

Dr. Aastha Pathak

THE DIVINE COW

Symbol of Dharma and Sustainer of Life

Since the dawn of civilization, the cow has occupied a sacred and irreplaceable place in human life. In India, the cow is revered as Gau Mata, the universal mother, whose nurturing presence embodies compassion, abundance, and sanctity. She is not merely an animal but a living manifestation of divinity, a benefactor whose service sustains physical health, spiritual purity, and social harmony. To speak of the cow is to speak of civilization itself, for wherever man has walked with dharma, the cow has walked beside him.

The Vedic seers recognized the cow as Aghnya, meaning "one who must never be harmed." She is described as Kamadhenu, the wish-fulfilling divine cow who grants every noble desire. The Rigveda extols cows as sources of wealth, strength, and auspiciousness. In our epics, cows have played a central role in defining dharma. In the Mahabharata, the gifting of cows was considered the highest charity, while in the Ramayana, King Janaka and others are described as protectors of cattle, demonstrating their role in prosperity. Lord Krishna, our beloved Gopala, grew up among cows, playing his flute amidst their company, symbolizing innocence, love, and harmony with nature. Thus, the cow is not just part of religion but the very foundation of Indian culture, spirituality, and rural life.

The cow is called Gau Mata because, like a mother, she nourishes selflessly. From the moment she gives milk, she nurtures not only her calf but also humanity. Cow's milk,

ghee, curd, butter, and buttermilk are life-giving foods, strengthening both body and mind. For centuries, these have been integral to the Indian diet, Ayurveda, and rituals. The cow is a silent teacher of dharma: she gives abundantly yet demands nothing. She survives on simple fodder and in return provides wealth that sustains entire villages. Just as a mother feeds her child before herself, so too does the cow offer her milk for the benefit of humanity.

In Ayurveda, the cow is regarded as the source of Panchagavya – milk, curd, ghee, urine, and dung – each of which has immense medicinal, agricultural, and spiritual value. Milk builds strength and clarity of mind, curd improves digestion and vitality, and ghee is considered pure and sattvic, essential in yajnas and rituals. Cow urine has therapeutic properties and is used in Ayurvedic formulations, while cow dung serves as a natural fertilizer, pesticide, and even as fuel when dried. In this way, the cow is a complete ecological cycle in herself – feeding us, healing us, and enriching the earth.

Traditional Indian agriculture has always depended on cows and oxen. Before the age of machines, it was oxen that ploughed the fields, ensuring food security for generations. Even today, cow dung remains one of the best natural fertilizers, rejuvenating soil without chemicals, while cow urine acts as an organic pesticide, protecting crops while keeping nature balanced. When the cow is cared for, the farmer thrives, and when agriculture flourishes, the nation prospers. Protecting cows is thus directly linked to food security, health, and environmental sustainability.

Every festival and every sacred ritual in Bharat has the cow at its center. In Diwali, cow worship is performed as Govatsa Dwadashi. In Pongal and Makar Sankranti, cows are decorated, honored, and worshipped for their service. During Gopashtami, cows are celebrated with devotion, remembering Lord Krishna's role as a cowherd. In temples, ghee lamps symbolize purity and auspiciousness, and offerings to deities often include milk and curd. The sacredness of the cow thus transcends daily life into spiritual practice, making her a bridge between man and the divine.

The cow is more than a biological being; she is a symbol of ahimsa, purity, and abundance. Her presence reminds us to live in harmony with nature and uphold compassion towards all living beings. In ancient India, the prosperity of a kingdom was measured by the number of cows it possessed. Even kings saw

themselves as guardians of cows, ensuring their protection as a sacred duty. The cow also represents equality and inclusiveness, for from the richest household to the poorest farmer, everyone has received nourishment from her. Thus, she unites society beyond caste, creed, or wealth.

Modern science is now rediscovering what Indian wisdom always knew. Research shows that cow by-products help in boosting immunity, enhancing soil fertility without chemicals, providing eco-friendly alternatives to plastics and fertilizers, and reducing carbon footprint through organic farming. Cow-based products are becoming central to sustainable living movements worldwide. What was once dismissed as traditional is now being recognized as eco-scientific.

In today's age of urbanization, industrialization, and consumerism, the cow often suffers neglect. Abandoned cows wandering streets, lack of proper shelters, and decreasing grazing lands are concerns that call for urgent attention. Protecting cows is not only a matter of faith but also of national responsibility. Several initiatives are now focusing on establishing gaushalas (cow shelters), promoting organic farming, and encouraging cow-based rural industries. By supporting these, every citizen can participate in safeguarding our mother cow.

For Bharat, the cow is more than an animal – she is an identity of culture and dharma. Ancient travellers who came to India noted the reverence for cows as a unique feature of this land. To this day, the cow remains a unifying symbol in the Indian ethos, representing both spiritual devotion and ecological wisdom. Our freedom fighters too upheld cow protection as a duty towards the nation. Lokmanya Tilak, Mahatma Gandhi, and many leaders emphasized the cow as the backbone of the rural economy and the moral strength of society.

To serve the cow is to serve the nation.

Gau Seva, or service to the cow, can be expressed in many ways – supporting gaushalas and adopting cows, promoting organic farming and cow-based products, educating the younger generation about the cultural and ecological importance of cows, and living a lifestyle that respects and protects cows as part of our dharmic responsibility. When the cow is safe, dharma thrives, and when dharma thrives, society flourishes.

The cow is not merely a domestic animal – she is Divine Mother, teacher, and benefactor. She symbolizes selfless giving, spiritual purity, and ecological balance. Reverence for the cow is not superstition but recognition of her indispensable role in sustaining life and civilization. In honoring the cow, we honor nature, tradition, and the sacred bond between man and the divine. As Bharatiyas, it is our sacred duty to protect and revere Gau Mata, ensuring that future generations inherit the blessings she bestows. Just as rivers nourish the land and the sun gives light, the cow nourishes humanity with her quiet, unending gifts. Truly, she is the Divine Cow – the eternal mother of civilization.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर – 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank
...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI
BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

गोरक्षा विभाग, विहिप की अ.भा. संघ बैठक

गोरक्षा विभाग, विहिप की अखिल भारतीय संच बैठक गत 24 अगस्त को गोधाम, उमाकल्याण ट्रष्ट, पानी घाट, परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन, मथुरा (उत्तर प्रदेश) में भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. गुरु प्रसाद सिंह जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में निम्न बिन्दुओं पर विचार विमर्श किया गया।

- ❖ जिन प्रान्तों का ट्रस्ट नहीं बना है वह केन्द्रीय बैठक के पूर्व अवश्य बन जाएं।
- ❖ संगठनात्मक रचना, प्रान्त टोली, जिला, प्रखण्ड, ग्राम टोली बनाना।
- ❖ दायित्वबोध हेतु एक दिन का वर्ग लगाना।
- ❖ जयपुर में आयोजित होने वाली केन्द्रीय बैठक (7, 8 व 9 अक्टूबर, 2025) की अपेक्षित सूची 15 सितम्बर, 2025 तक दिल्ली कार्यालय भेजें।
- ❖ अपेक्षित ट्रस्ट के अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं गोरक्षा प्रमुख, सह गोरक्षा प्रमुख अपेक्षित।
- ❖ आयाम का कार्यक्षेत्र प्रान्त में तय करना। चयनित जिला, प्रखण्ड, ग्राम आदि।
- ❖ गौशालाओं की चार प्रकार की सूची।
- ❖ गौशाला प्रबन्धकों की बैठक, अनुभव एवं प्रगति हेतु क्रियान्वयन हो।
- ❖ गोसम्पदा का विस्तार – 200रू. वार्षिक एवं 2000रू. आजीवन (10 वर्ष) के लिए।
- ❖ गोविज्ञान परीक्षा की तिथि एवं लक्ष्य हेतु संघ की गोसेवा गतिविधि से चर्चा करें।
- ❖ एक लाख के संरक्षक बनाने की योजना।
- ❖ गोपाष्टमी विशेषांक में विज्ञापन हेतु आर्थिक सहयोग का लक्ष्य। 31 अक्टूबर, 2025 तक विज्ञापन व राशि दिल्ली कार्यालय आनी चाहिए।
- ❖ जयपुर बैठक में प्रान्त के ट्रस्ट की आडिट रिपोर्ट लाना है।
- ❖ गोपाष्टमी (29 अक्टूबर, 2025) के विशेष कार्यक्रमों की योजना बनायें।
- ❖ प्रान्तों में सरकार से गोचर भूमि लीज पर लेकर वेसहारा गोवंश की व्यवस्था करना।
- ❖ नैपियर घास उगाकर चारे की विशेष व्यवस्था करना। श्रीनारायण जी अग्रवाल, महामंत्री, विशेषरूप से सहयोग करेंगे।
- ❖ प्रान्त में एक आदर्श गौशाला एवं 10 गांव आदर्श की प्रगति।
- ❖ गोभक्त महिला सम्मेलन दिल्ली में 10 से 20 फरवरी, 2026 के बीच 2 दिन का होगा। तिथि केन्द्रीय बैठक जयपुर में बताई जायेगी।
- ❖ संघ के शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम एवं पंचपरिवर्तन हेतु सतत प्रयास हो।
- ❖ गोरथ योजना, गोकथा कहने वालों से संपर्क किया जाये।
- ❖ जयपुर बैठक में प्रदर्शनी हेतु गोरक्षा के कार्यों के चार्टस लाएं।

इस अवसर पर सर्वश्री स्थानुमलयन जी, गुरु प्रसाद सिंह जी, दिनेश उपाध्याय जी, केशव राजू जी, नारायण अग्रवाल जी, माध्वी गोस्वामी जी, विवेक शर्मा जी, सुरेन्द्र लाम्बा जी, लाल बहादुर सिंह जी, पवन त्यागी जी, शैलेन्द्र सिंह जी, उत्तम राव कुदले जी, टी. यादगिरी राव जी, अमल चक्रवर्ती जी, त्रिलोकी नाथ बागी जी, नन्दिनी भोजराज जी, सोहन विश्वकर्मा जी, प्रभात शर्मा जी, पूरन सिंह जी, महेन्द्र राजपूत जी, सतीश चौधरी जी, सनत कुमार जी एवं सन्तराम गोयल जी उपस्थित थे।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 सितम्बर, 2025

गाय धार्मिक-सांस्कृतिक धरोहर
गोहत्या से शांति-सौहार्द्र को खतरा : हाई कोर्ट

चंडीगढ़। चंडीगढ़ पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने गोहत्या के एक मामले में आरोपित आसिफ की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज करते हुए अपने फैसले में गाय को भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक धरोहर बताया। जस्टिस संदीप मोदगिल ने कहा कि इसकी हत्या केवल एक अपराध नहीं, बल्कि सामाजिक सौहार्द्र और सार्वजनिक शांति के लिए गंभीर खतरा है। कोर्ट ने आरोपी के आपराधिक रिकार्ड और आदतन अपराध की प्रवृत्ति को आधार बनाकर यह फैसला सुनाया।

हरियाणा पुलिस के अनुसार, आसिफ पर आरोप है कि वह दो गायों को हरियाणा से राजस्थान ले जाकर हत्या करने की तैयारी में था। यह कार्य हरियाणा गोवंश संरक्षण एवं गौ संवर्धन अधिनियम 2015 और पशु क्रूरता निवारण अधिनियम 1960 का उल्लंघन है। आसिफ का आपराधिक इतिहास रहा है और उसके खिलाफ पहले भी गोहत्या से संबंधित तीन एफआइआर दर्ज हैं, जिनमें उसे जमानत मिल गई थी। जस्टिस मोदगिल ने कहा कि गाय भारत की कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है। संविधान का अनुच्छेद 51 (ए) (जी) सभी नागरिकों को जीव–जंतुओं के प्रति करुणा का भाव रखने को बाध्य करता है। कोर्ट ने कहा कि संविधान केवल अमूर्त अधिकारों की रक्षा नहीं करता, बल्कि एक न्यायपूर्ण, करुणामय और एकजुट समाज के निर्माण का प्रयास भी करता है।

सुप्रीम कोर्ट के 2005 के फैसले का हवाला :

कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के 2005 के फैसले स्टेट आफ गुजरात बनाम मिर्जापुर मोती कुरैशी कसाब जमात का हवाला देते हुए गोहत्या पर रोक लगाने वाले कानूनों को संवैधानिक ठहराया। अदालत ने पाया कि आसिफ ने पहले जमानत का दुरुपयोग किया और बार–बार गोवंश–हत्या जैसे अपराधों में शामिल रहा। हाई कोर्ट ने टिप्पणी की कि अग्रिम जमानत निर्दोष लोगों को अन्यायपूर्ण गिरफ्तारी से बचाने के लिए है, न कि आदतन अपराधियों को कानून से बचाने का उपकरण। कोर्ट ने माना कि जमानत देने से आसिफ जांच में हस्तक्षेप या साक्ष्यों से छेड़छाड़ कर सकता है। बता दें कि इस मामले में आरोपित के खिलाफ तीन अप्रैल 2025 को नूंह में हरियाणा गोवंश संरक्षण एवं गो संवर्धन अधिनियम, 2015 और पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया था। आरोपित ने गिरफ्तारी से बचने के लिए अग्रिम जमानत की मांग को लेकर याचिका दायर की थी।

साभार – दैनिक जागरण

कानून–व्यवस्था बनाए रखने पर दिया जोर

कानून–व्यवस्था बनाए रखने पर जोर देते हुए कोर्ट ने कहा कि ऐसे मामलों में सख्ती जरूरी है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, लेकिन बार–बार अपराध की प्रवृत्ति दिखाने वाले व्यक्ति को इसका लाभ नहीं दिया जा सकता और कानून को सख्ती से अपना रास्ता चुनना चाहिए।

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक